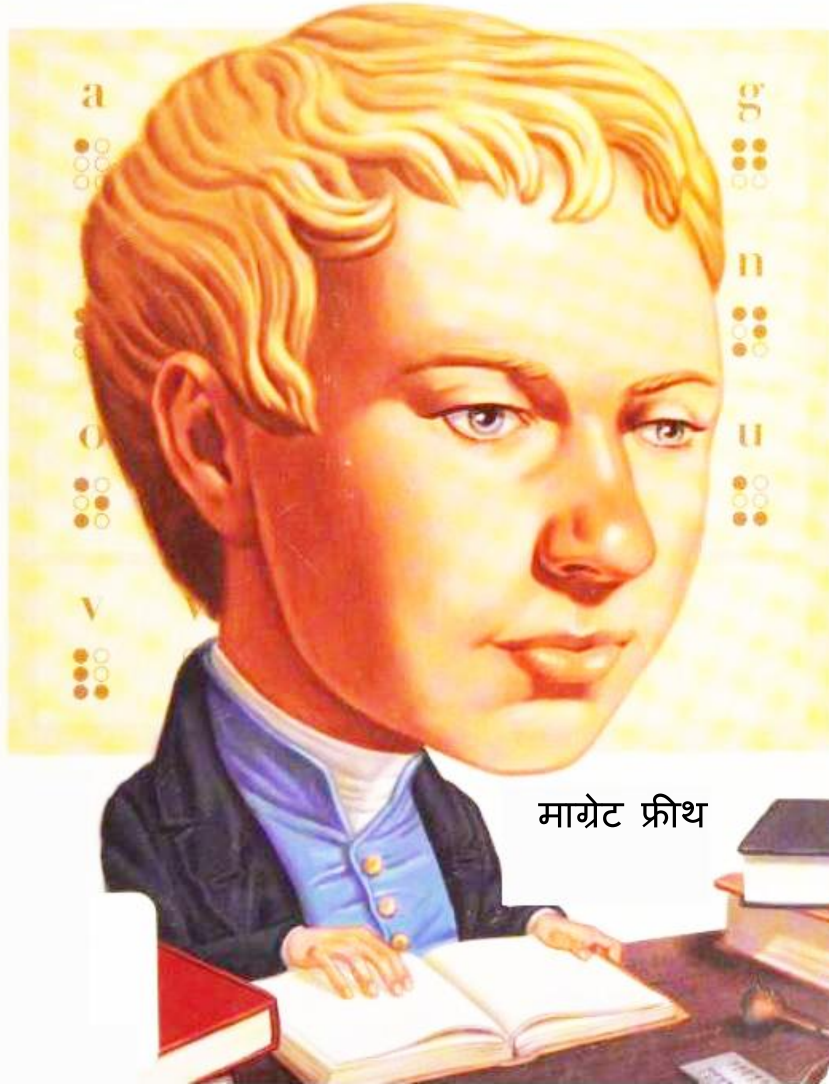
लुई ब्रेल कौन थे?



माग्रेट फ्रीथ

लुई ब्रेल कौन थे?



लुई ब्रेल कौन थे?

जब लुई ब्रेल तीन साल के थे, तब उनके साथ एक भयानक दुर्घटना हुई जिसने उन्हें अंधा कर दिया. लेकिन अंधे होने के बावजूद लुई का बचपन खुशहाल था. अंधेरे में रहने ने उसे अपने आसपास की दुनिया के प्रति और भी अधिक उत्सुक और संवेदनशील बनाया. वो एक उज्ज्वल, अच्छे स्वभाव का लड़का था. उसके पास एक उल्लेखनीय याददाश्त भी थी. वो पढ़ या लिख नहीं सकता था. लेकिन जिस छोटे से फ्रांसीसी गाँव में वो रहता था, वहां के स्कूल में वो चीज़ें सुनकर उन्हें याद रख सकता था. वो स्कूल के सबसे अच्छे छात्रों में से एक था.

दस साल की उम्र में, लुई, फ्रांस के एकमात्र नेत्रहीन बच्चों के स्कूल में पढ़ने के लिए पेरिस चला गया. वहाँ के पुस्तकालय में नेत्रहीनों के लिए चौदह पुस्तकें थीं जो उभरे हुए, अक्षरों से मुद्रित थीं. अंधे बच्चे उन्हें अपनी उंगलियों से छू-छूकर पढ़ते थे.



किताबें बहुत बड़ी होती थीं और कुछ का वजन तो नौ पाउंड था! कुछ ही लड़के उन्हें पढ़ने में सक्षम होते थे. लुई उनमें से एक था.

तब उसने "रात्रि-लेखन" नाम की एक प्रणाली के बारे में सुना. लुई उत्साहित हुआ. इसमें उभरे हुए अक्षरों के स्थान पर उभरे हुए बिंदुओं के कोड का उपयोग किया गया था. लेकिन उसने पाया कि "रात्रि लेखन" में भी कुछ समस्याएँ थीं.

उसका एक ही उत्तर था - अपनी खुद की प्रणाली का आविष्कार करना.

लुई ने अपने पढ़ने और लिखने के कोड पर तीन साल तक काम किया. जब वो पंद्रह वर्ष का था, तब तक उसने इसका पता लगा लिया था.

लुई उन किताबों के लिए बेचैन था जिन्हें वह खुद पढ़ सकता था. लेकिन पुस्तकालय की किताबें पढ़ना आसान नहीं था. प्रत्येक अक्षर इतना बड़ा होता था कि पाठक को उसे अपनी कई अंगुलियों से ट्रेस करना पड़ता था. पाठक को उन सभी अक्षरों को भी याद रखना पड़ता था जो किसी शब्द से पहले गए थे. बड़े अक्षरों का अर्थ था बड़े पृष्ठ.



आज, लगभग दो सौ साल बाद, पूरी दुनिया अभी भी उसी प्रणाली का उपयोग करती है जिसे "ब्रेल" कहा जाता है. नेत्रहीन उस निःस्वार्थ, दृढ़ निश्चयी युवक लुई ब्रेल के हमेशा आभारी रहे हैं.

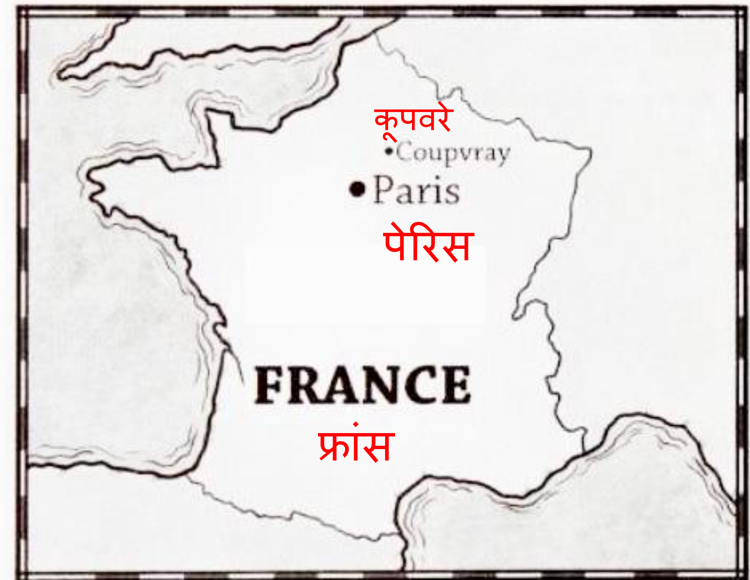
फ्रांस के कूपवरे में परिवार के घर में लुई ब्रेल के सम्मान में एक संगमरमर की पट्टिका लगी है. उसके अनुसार:

इस घर में 4 जनवरी 1809 को, लुई ब्रेल प्रणाली का आविष्कारक पैदा हुआ था.

उसने नेत्रहीनों द्वारा उपयोग के लिए उभरे हुए बिंदुओं में लेखन को खोजा.

उसने उन सभी लोगों के लिए दरवाजे खोले जो उससे पहले ज्ञान जो देख नहीं सकते थे.

दुर्घटना



1809 में, 4 जनवरी को, लुई ब्रेल का जन्म फ्रांस के कूपवरे में हुआ था. कूपवरे, पेरिस के हलचल भरे शहर से पच्चीस मील दूर एक छोटा सा खेती वाला गाँव था.

लुई की माँ ने अपनी बहनों और भाई को अपना नया बच्चा दिखाया. लुई अपनी माँ की गोद में बहुत छोटा लग रहा था. मोनिका और साइमन-रेने अपने नए बेटे को लेकर चिंतित थे. वो बहुत छोटा था, और वो कमजोर भी था. क्या वो जीवित रहेगा? हरेक को लुई के जीवित रहने पर शक था. इसलिए, केवल तीन दिनों के बाद ही गाँव के पुजारी ने पूजा-पाठ करके, लुई का नामकरण कर दिया.





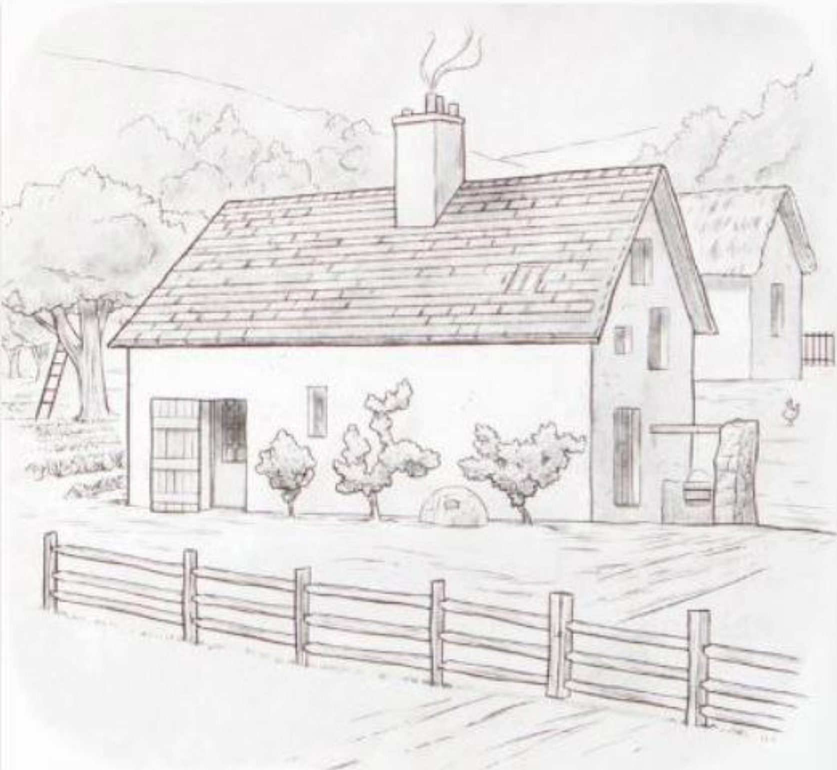
पर उसके माता-पिता को चिंता करने की जरूरत नहीं थी. पूरी देखभाल के कारण, लुई नीली आँखों और घुंघराले गोरे बालों वाला एक खुश, स्वस्थ लड़के के रूप में विकसित हुआ. जैसे ही वो चलने लगा, वैसे ही वो बाहर खेतों में भागने लगा, जहाँ उसकी माँ उसका पीछा करती थी. उसके भाई-बहन जो लुई से बहुत बड़े थे, को छोटे लुई के साथ खेलना पसंद था.

लुई का परिवार, दस एकड़ जमीन पर एक साधारण से घर में रहता था. उन्होंने ताजे दूध के लिए एक गाय और अंडों के लिए मुर्गियां रखीं थीं. उनके पास एक सब्जी का बगीचा, फलों के पेड़, और एक छोटा अंगूर का बाग़ था.

ब्रेल परिवार अमीर नहीं था, लेकिन वो कड़ी मेहनत करके अच्छा जीवनयापन करता था.

लुई की माँ परिवार और बगीचे की देखभाल करती थीं.





लुई के पिता अपना दिन, घर के बाहर एक वर्कशॉप में बिताते थे. वो घोड़ों की काठी बनाने का काम करते थे. वही धंधा उनके पिता भी करते थे. वे चमड़े का काम करते थे - लगाम, और काठी बनाने का.

लुई बगीचे में अपनी मां की मदद करता और मुर्गियों के अंडे इकट्ठा करता था. लेकिन जिस चीज से उसे सबसे ज्यादा प्यार था, वो था अपने पिता के साथ उनकी वर्कशॉप में जाना.

साइमन-रेने ज्यादातर समय अपने वर्कशॉप में ही बिताते थे.

जब पिता चमड़े के टुकड़ों को काटते और सिलते थे, तब लुई पास बैठता और बची हुई चमड़े की पट्टियों और टुकड़ों के साथ खेलता रहता था.



कभी-कभी उसके पिता लुई को एक फैंसी काठी पर बैठा देते थे और तब लुई घुड़सवारी करने का नाटक करता था.

लुई बेंच के पड़े सभी औजारों से मोहित था. एक दिन जब उसके पिता कुछ समय के लिए बाहर गए, तब लुई ने एक तेज नुकीला औज़ार उठाया. उसने चमड़े के एक टुकड़े में छेद करने की कोशिश की. लेकिन वो सूजा फिसल गया और उसने लुई की आंख में छेद कर दिया.





लुई भयानक दर्द से चिल्लाया! उसके माता-पिता दौड़े हुए आए. वो क्या करें? निकटतम चिकित्सक दूसरे शहर में, कई मील दूर था. हालाँकि, कूपवरे में एक महिला थी जो बीमारों की देखभाल करती थी. महिला ने आकर लुई की आंख को कमल के पानी से धोया.

लेकिन उससे नुकसान ही हुआ. लुई उस आंख से फिर कभी नहीं देख पाया. मामले को बदतर बनाने के लिए, संक्रमण लुई की दूसरी आंख में भी फैल गया. जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उसकी दुनिया और काली और स्याह होती चली गई. जब वो चार साल का हुआ, तब तक लुई पूरी तरह से अंधा हो चुका था.

गांव का स्कूल



फ्रांस में उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में, गरीब परिवारों के अंधे बच्चे अक्सर सड़कों पर भीख मांगते थे. लुई भाग्यशाली था कि उसके पिता और माँ कुछ अमीर थे जो उसकी अच्छी देखभाल कर सकते थे.

पिता ने उसके लिए एक लकड़ी का बेंत बनाया. बेंत की मदद से लुई ने घर के अंदर-बाहर आना-जाना शुरू कर दिया.

साइमन-रेने ने उन गतिविधियों की भी तलाश की, जिन्हें लुई अपने हाथों से कर सकता था. उन्होंने लुई को लगाम के लिए चमड़े के छोटे टुकड़े बनाना सिखाए.





लुई के माता-पिता दृढ़ थे कि लुई पढ़ना-लिखना सीखे. पिता ने एक लकड़ी के बोर्ड में कीलें ठोककर अक्षरों के आकार की एक वर्णमाला बनाई. लुई ने अपनी उंगलियों से उन्हें छू-छूकर अक्षरों के आकार का पता लगाया. उसे यह सब सीखने में ज्यादा समय नहीं लगा. इस पर किसी को आश्चर्य भी नहीं हुआ. लुई होशियार था और तेज़ी से सीखने वाला था.



गांव के पुजारी फादर जैक्स पल्लू, ब्रेल परिवार के मित्र थे. उन्होंने देखा कि लुई एक होशियार और जिज्ञासु लड़का था. इसलिए उन्होंने उसे अपने पास पढ़ाने के लिए बुलाया.

पुजारी और छोटा लड़का शांत गिरजाघर में बैठकर पक्षियों को गाते हुए सुनते थे. वे पेड़ों को छूकर या फूलों को सूंघते हुए बगीचे में घूमते थे.

फादर पल्लू, लुई को उन पौधों के नाम बताया और फिर लुई उन्हें कभी नहीं भूला. कभी-कभी फादर पल्लू लुई को कहानियां पढ़कर सुनाते थे. घर पर जाकर वही कहानियाँ लुई, अपने परिवार को सुनाता था.



नेपोलियन बोनापार्ट



नेपोलियन एक फ़्रांसीसी सैन्य नेता था जिन्होंने अधिकांश यूरोप पर विजय प्राप्त की और वो फ़्रांस के सम्राट बने. 1614 में नेपोलियन की सेनाओं को अंग्रेजों और उनके सहयोगियों ने पराजित किया और फिर सम्राट को निर्वासन (एक्साइल) में डाल दिया गया.

फ्रांसीसी के खिलाफ युद्ध के दौरान एक समय पर रूसी सैनिकों की एक टुकड़ी कूपवरे गांव से होकर गुज़री थी. उन्होंने ब्रेल के दरवाजे पर दस्तक दी और वहां सोने और खाने की मांग की. लुई, जो उस समय छह साल का था, विदेशी भाषा बोलने वाले इन असभ्य लोगों से निश्चित तौर पर डरा होगा.

जब लुई सात साल का था, तब फादर पल्लू ने गांव के स्कूल के शिक्षक को, लुई को कक्षा में बैठने के लिए मना लिया.

हर दिन पास में रहने वाला एक लड़का लुई को स्कूल ले जाने के लिए ब्रेल हाउस आता था. लुई ने जल्द ही उच्च अंक अर्जित किए. उसने अगले दो साल अपने गांव के स्कूल में बिताए.





लुई की अद्भुत स्मरण शक्ति थी और उसे वो सब कुछ याद रहता था जो शिक्षक, स्कूल में जोर-जोर से पढ़ाते थे. हालाँकि, लुई तब निराश होता था जब अन्य छात्र पढ़ने-लिखने के लिए अपनी किताबें निकालते थे.

फिर फादर पल्लू एक विचार के साथ ब्रेल परिवार के पास गए. उन्हें और लुई के शिक्षक को लगा कि लुई को पेरिस के एक विशेष स्कूल में जाना चाहिए. इसे रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ कहा जाता था. पूरे फ्रांस में, वो नेत्रहीन बच्चों के लिए एकमात्र स्कूल था.

वो दुनिया में अपनी तरह का पहला नेत्रहीनों का स्कूल था. उसके लिए लुई को पेरिस में रहना होगा. अपने बेटे से अलग होना परिवार के लिए मुश्किल था, लेकिन ब्रेल परिवार, लुई के लिए सबसे अच्छा चाहते थे. इसलिए, वे इस बात के लिए मान गए.

फिर फादर पल्लू कूपवरे के लार्ड मेयर से मिलने के लिए पहाड़ी पर चढ़े. लार्ड मेयर गाँव का सबसे धनी और शक्तिशाली व्यक्ति था.





लॉर्ड ने पेरिस के स्कूल को एक पत्र लिखा. उन्होंने उस स्कूल के निर्देशक से लुई को दाखिला देने और उसे छात्रवृत्ति देने के सिफारिश की. इसका मतलब था कि अब लुई वहां मुफ्त में पढ़ सकता था.

ब्रेल परिवार ने उत्तर की प्रतीक्षा की. अंत में एक पत्र आया. जवाब "हां" में था!

वैलेंटाइन हौयू

1771 में एक सितंबर को एक युवक ने कुछ ऐसा भयानक देखा जिसने उसकी ज़िंदगी को हमेशा के लिए बदल दिया. एक अंधे कंडक्टर के निर्देशन में पेरिस के एक मेले में लाल गाउन, ऊंची कैप और नकली चश्मे पहने हुए नौ नेत्रहीन लड़के संगीत के वाद्ययंत्र बजा रहे थे. पर तभी बदमाशों के एक गुट ने उन्हें बहुत परेशान किया और उनका मज़ाक उड़ाया. वो देखकर हौयू को बड़ा धक्का लगा.

"मैं नेत्रहीनों को पढ़ना सिखाऊंगा," हौयू ने प्रण किया.

1734 में हौयू ने नेत्रहीन युवाओं के लिए रॉयल इंस्टिट्यूट फॉर द ब्लाइंड की शुरुआत की. लुई वहीं के स्कूल में गया और बाद में वहीं पर एक शिक्षक बना. उस समय पूरे देश में नेत्रहीन बच्चों के लिए वो ही एकमात्र स्कूल था.



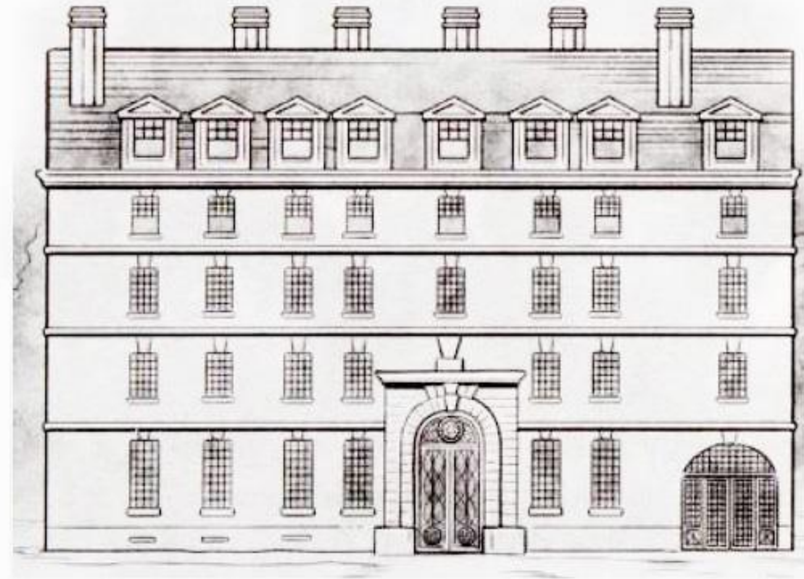
एक व्यापक दुनिया



फरवरी की सर्द सुबह, दस वर्षीय लुई ने अपने भाई-बहनों से अलविदा कहा. उसने अपनी माँ को गले लगाया, और अपने पिता के साथ पेरिस के लिए घोड़ागाड़ी पर चढ़ा. वो अपने छोटे से गाँव को छोड़कर फ्रांस की राजधानी जा रहा था, जहाँ पाँच लाख से अधिक लोग रहते थे.



साइमन-रेने को यह देखकर आश्चर्य हुआ, कि वो संस्थान एक जर्जर इमारत थी. वो दो सौ साल से अधिक पुरानी थी. उस इमारत में कभी एक जेल हुआ करता था. वहां अधिकांश छात्र लुई की तरह ही अंधे थे, लेकिन स्कूल में कुछ सामान्य दृष्टि वाले लड़के भी रहते थे. उन्हें नेत्रहीन बच्चों की मदद करने के बदले में मुफ्त में पढ़ने का मौका मिलता था.



साढ़े चार घंटे बाद वे पेरिस पहुंचे. लुई भीड़-भाड़ वाली, शोर-शराबे वाली सड़कों या अंधे भिखारियों को लगभग हर कोने में देख सकता था. उनमें से कई बच्चे थे, जिन्होंने सिक्के मांगने के लिए अपने हाथ आगे बढ़ाए. लेकिन इससे उसके पिता दुखी हुए क्योंकि उन्होंने लुई का हाथ पकड़ा और वो उसे अपने साथ ले गए.

एक ठंडे, चिपचिपे कमरे में वे निदेशक डॉ. सेबेस्टियन गुइली से मिले. उन्होंने लुई से हाथ मिलाया और उससे कहा कि वो स्कूल के साठ लड़कों में सबसे छोटा था. (वहाँ तीस लड़कियाँ भी थीं.) बहुत जल्द ही, लुई और उसके पिता को, एक-दूसरे से अलविदा कहने का समय आ गया.



उसने लुई को एक स्कूल यूनिफॉर्म और एक बैज दिया. उस पर 70 नंबर अंकित था. लड़के ने लुई को हर समय बैज पहनने के लिए कहा. उस पहली रात लुई को उसका नया घर कितना अजीब लगा होगा? वो बहुत अकेला था और यह भी नहीं देख पा रहा था कि वो कहाँ था. लुई अपने आस-पास के लड़कों को बात करते और हंसते हुए सुन सकता था. उनमें से एक लड़का आया और उसने हेलो कहा. उसका नाम गेब्रियल गौथियर था. वो लुई से सिर्फ एक साल बड़ा था. फिर वे जीवन भर के लिए दोस्त बन गए.



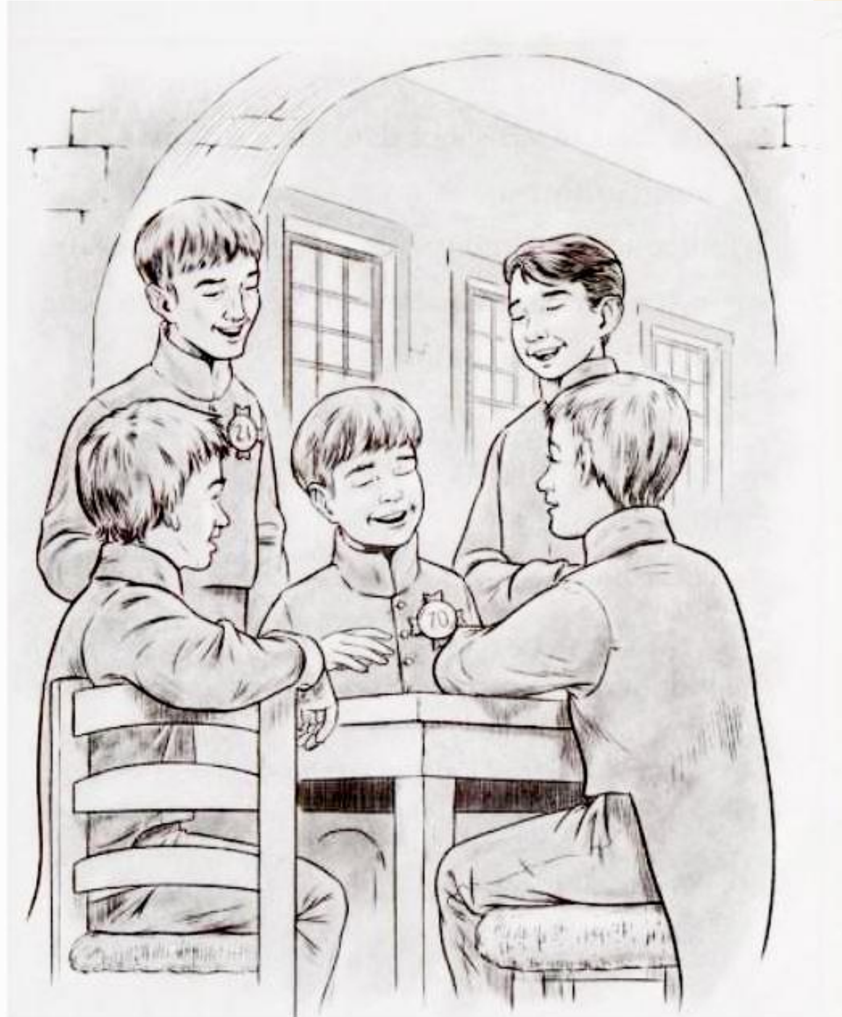
एक दृष्टि वाले लड़के ने लुई को हाथ पकड़ा और वो उसे सीढ़ियों की खड़ी चढ़ाई के बाद लड़कों के छात्रावास तक ले गया. लड़के ने उसे एक पुआल के गद्दे वाला बिस्तर और कपड़े रखने के लिए एक छोटी अलमारी दिखाई.



लुई को नहीं पता था कि जब वह जागेगा तो क्या होगा. उसे गेब्रियल से शीघ्र ही पता चला कि यदि कोई नाश्ते के लिए देर से पहुँचता है, तो वो मुसीबत में पड़ जाता है. डॉ. गुइली एक कठोर व्यक्ति थे, जो छात्रों को कठोर दंड देने से नहीं हिचकिचाते थे. कभी-कभी वो दुर्व्यवहार करने वाले और आज्ञा न मानने वाले छात्र को एक कमरे में केवल रोटी और पानी के साथ अकेला रखते थे!

लुई को अपने परिवार और ग्रामीण इलाकों की बहुत याद आती थी. उसे खेतों में ताजी हवा की गंध और अपने चेहरे पर तेज धूप की याद आती थी. यहां उसे पढ़ाई और काम करने के लिए अंदर ही रहना पड़ता था. कमरे नम और ठंडे थे. कई लड़कों की खांसी काफी खराब थी.

लेकिन लुई उस तरह का लड़का था जिसने किसी भी स्थिति में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया. उसे मेहनत करने में कोई आपत्ति नहीं थी. अन्य छात्रों ने उसके चिढ़ने, और सहज व्यवहार का आनंद लिया. कूपवरे में, खेलने के लिए उसके साथ कोई नेत्रहीन लड़का नहीं था.



लुई अकेले बैठकर दूसरे लड़कों को इधर-उधर दौड़ते, धक्का-मुक्की करते और चिल्लाते हुए सुनता था. पर यहां उसने जल्दी से बहुत सारे दोस्त बना लिए.

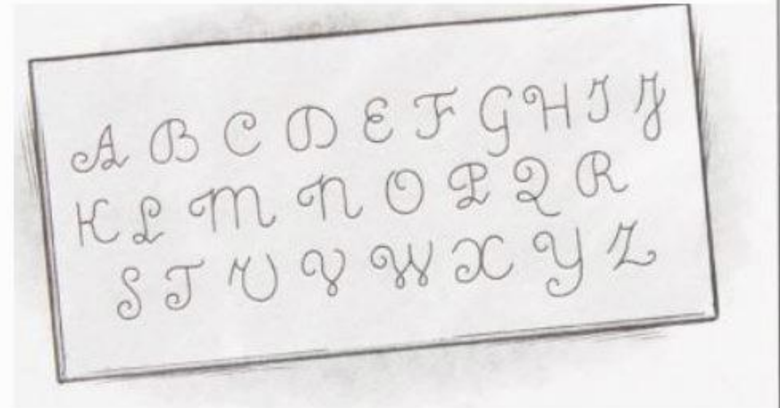
हर सुबह लड़के अपना पन्द्रह घंटे का दिन शुरू करने के लिए कक्षाओं में जाते थे. वो व्याकरण, अंकगणित, इतिहास, ग्रीक, लैटिन, स्पेनिश, बीजगणित और भूगोल का अध्ययन करते थे. सीखने के लिए उन्हें अपनी याददाश्त पर भरोसा करना था. लुई जल्द ही अपनी कक्षा के सर्वश्रेष्ठ छात्रों में से एक बन गया.

लुई पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए उत्सुक था. वहां नेत्रहीन छात्रों के लिए केवल चौदह किताबें होना बेहद निराशाजनक था!

इन पुस्तकों में उभरी हुए अक्षरों के साथ - स्कूल के संस्थापक वैलेन्टिन हौयू द्वारा आविष्कार की गई प्रणाली का इस्तेमाल किया गया था. उन्हें बहुत धीमी गति से ही पढ़ा जा सकता था.



हौयू ने एम्बॉसिंग कैसे शुरू की



एक नेत्रहीन भिखारी, सत्रह वर्षीय फ्रेंकोइस ले सुयूर वैलेंटाइन हौयू का छात्र बन गया. एक दिन फ़्राँकोइस ने एक मुद्रित कार्ड के पीछे एक उठाया हुआ अक्षर "O" महसूस किया. उसने वैलेंटाइन को एम्बॉस्ड, या रेज़्ड, अक्षरों के साथ वर्णमाला को प्रिंट करने का विचार दिया. नेत्रहीनों के लिए पुस्तकें प्रकाशित की गईं. एम्बॉसिंग 1854 तक नेत्रहीनों के लिए पढ़ने और लिखने की आधिकारिक फ्रेंच प्रणाली बन गई.



दोपहर का समय कोई कुशलता सीखने में बीतता था. लड़के ने केवल उपयोगी कुशलताओं के साथ स्कूल छोड़ते थे बल्कि उनका काम स्कूल के लिए पैसे कमाने में भी मदद करता था.

उन्होंने बहुत सी चीजें बनाईं - बुनी हुई चटाई, उनके स्कूल की वर्दी के लिए कपड़े, चप्पलें, टोकरियाँ और मछली पकड़ने के जाल. फिर से, लुई ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया. जब वो चौदह वर्ष का था, तब तक वो चप्पल वर्कशॉप का इंचार्ज बन गया था.





डॉ. गुइली ने ही थे संगीत के प्रति लुई की प्राकृतिक प्रतिभा की खोज की. लुई सिर्फ सुनकर ही विभिन्न वाद्ययंत्र बजा सकता था. इसका मतलब था कि लुई को किसी वाद्ययंत्र को बजाने के लिए केवल उसका एक टुकड़ा सुनना ज़रूरी था. उसने न केवल चेलो बल्कि पियानो और बाद में ऑर्गन भी बजाया.

हालांकि डॉ. गुइली सख्त थे और उन्हें खुश करना मुश्किल था, लेकिन उन्होंने संगीत के प्रति अपना प्रेम, छात्रों के साथ साझा किया. उन्हें स्कूल ऑर्केस्ट्रा पर गर्व था और उन्होंने स्कूल संगीत कार्यक्रम के लिए उपकरणों पर दिल खोलकर पैसा खर्च किया. उन्होंने छात्रों के उपयोग के लिए स्कूल को तीन पियानो भी दिए.



लुई, स्कूल ऑर्केस्ट्रा और कोरस में शामिल हुआ. उससे जितना हो पाया उसने उतना गाया और संगीत बजाया. जब तक वो जीवित रहा तब तक संगीत लुई के जीवन का हिस्सा रहा.



बेहतरी के लिए बदलाव

लुई के दूसरे वर्ष के दौरान, एक नए निर्देशक ने डॉ. गुइली की जगह ली. उन्होंने संस्थान में जो देखा उसे देखकर वो हैरान रह गए. उन्होंने संस्थान को, छात्रों के लिए एक स्वस्थ, खुशहाल जगह बनाने के बारे में सोचा.



डॉ. अलेक्जेंड्रे पिग्नियर

दो डॉक्टरों को बच्चों की जांच करने के लिए लगाया गया. बच्चों के चेहरे पीले थे और वे अपोषित थे. अब तक लुई को अन्य लड़कों की तरह ही खांसी हो गई थी. कुछ बच्चों में तपेदिक के लक्षण दिखाई दे रहे थे. वो एक ऐसी बीमारी थी जो सीधे फेफड़ों पर हमला करती थी.

तपेदिक (टीबी)



क्षय रोग या टीबी, बैक्टीरिया के कारण होने वाली बीमारी थी जो आमतौर पर फेफड़ों पर हमला करती थी. क्षय रोग, शरीर के अन्य भागों पर भी हमला कर सकता था. वो बीमारी खांसने, छींकने, बोलने या गाने के माध्यम से हवा के ज़रिये एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता थी.

लुई के दिनों में क्षय रोग का कोई इलाज नहीं था. संस्थान के कई लड़के टीबी की पुरानी खांसी से पीड़ित थे. भीड़-भाड़ वाले छात्रावासों में रहने वाले इतने सारे लड़कों के साथ इस हवाई बीमारी का फैलना काफी आसान था.

तपेदिक को आजकल एंटीबायोटिक दवाओं से ठीक किया जा सकता है, जो लुई ब्रेल के समय में उपलब्ध नहीं थीं.

शुरू से ही, डॉ. पिग्नियर ने स्कूल को एक नए भवन में स्थानांतरित करने के लिए फ्रांसीसी सरकार से विनती की. पर ऐसा होने में तेईस साल लगे.

डॉ. पिग्नियर ने जल्दी से छात्रों का दिल जीता. वो उन्हें हर गुरुवार को स्कूल के बाहर सैर पर भेजते थे. बच्चों को ताजी हवा चाहिए थी. लड़कों का एक समूह एक लंबी रस्सी से एक दृष्टिवान लड़के को नेता के रूप में पकड़कर रखते थे. वे पेरिस की सड़कों से गुज़रते, बगीचे के पौधों के खुशबू सूंघते और रास्ते में सभी नई आवाज़ें सुनते थे.



लुई ने फूलों को सूंघते समय फादर पल्लू के साथ अपने दिनों के बारे में सोचा. लड़के रस्सी से एक-दूसरे को खींचते थे, और बगीचे को अच्छी तरह से जानने की कोशिश करते थे.

जैसे ही वे खुले लोहे के फाटकों में से घुसते, लड़के घास पर गिरते और दृष्टिवान बच्चों की तरह ही, घास में नकली लड़ाई लड़ते थे.





एक गर्मी के दिन डॉ. पिग्नियर ने लड़कों को एक साथ बुलाया. उन्हें पता चला था कि वैलेन्टिन हौयू पेरिस में, स्कूल से कुछ ही दूर एक अपार्टमेंट में रहते थे. हौय ने यूरोप के कई देशों की यात्रा की थी और अन्य देशों में नेत्रहीनों के लिए स्कूल स्थापित करने में वर्षों बिताए थे. वो कमजोर हो गए थे और छिहत्तर वर्ष के थे. वो अब स्वयं लगभग अंधे थे.

जब डॉ. गुइली निदेशक थे, तब हौयू ने संस्थान की मदद करने का प्रयास किया था. लेकिन डॉ गुइली ने उन्हें मना कर दिया था. अब स्कूल ने हौयू के सम्मान में एक समारोह की योजना किया. यह अगस्त 1821 को हुआ. हौयू के भोजन कक्ष में घुसते ही छात्रों ने ताली बजाई और खुशी मनाई. देर शाम तक उन्होंने लड़कों से बातें कीं.

रात के खाने के बाद ऑर्केस्ट्रा बजाया गया और छात्रों के एक कोरस ने, तैंतीस साल पहले हौयू के कुछ छात्रों द्वारा रचित एक गीत गाया. लड़कों ने उन उभरी हुई किताबों को पढ़ा जो हौयू ने स्कूल के शुरू होने पर उन्हें दी थीं.

कार्यक्रम के अंत में, डॉ. पिग्नियर ने हौयू को नेत्रहीनों, विशेषकर बच्चों के लिए जो कुछ उन्होंने किया था, उसके लिए धन्यवाद दिया. अंत में हौयू ने अपनी कांपती हुई आवाज़ में कहा, "मेरे प्यारे बच्चों, वो भगवान ही है जिसने यह सब कुछ किया है."



रात्रि-लेखन

एक दिन डॉ. पिग्नियर ने लड़कों को संस्थान में आए एक दिलचस्प मेहमान के बारे में बताया.

कैप्टन चार्ल्स बार्बियर फ्रांसीसी सेना में अधिकारी रह चुके थे. उन्होंने युद्ध के मैदानों में अंधेरे में सैनिकों के लिए पढ़ने-लिखने की एक प्रणाली का आविष्कार किया था. उन्होंने इसे "रात्रि-लेखन" नाम दिया था. उन्होंने सोचा कि वो प्रणाली अंधों के लिए भी काम करेगी. वो उस प्रणाली को ब्लाइंड स्कूल के लड़कों पर आजमाना चाहते थे.

डॉ. पिग्नियर ने छात्रों से पूछा कि क्या वे उनकी प्रणाली का परीक्षण करने के इच्छुक होंगे. फिर बारह लड़कों ने अपना हाथ उठाया. लुई उसमें पहले व्यक्ति थे. क्या पता "रात्रि-लेखन" उभरी हुई किताबों की तुलना में पढ़ने का एक बेहतर तरीका साबित हो?

डॉ. पिग्नियर ने समझाया कि इस पठन प्रणाली में उभरे हुए बिंदुओं और डैश का उपयोग किया जाता था.



कप्तान चार्ल्स बार्बियर

कप्तान ने प्रत्येक लड़के को एक शीट दी और उन्हें डॉट्स को महसूस करने को कहा.

लेकिन उन्होंने उन उभरे हुए बिंदुओं को कैसे बनाया? लुई यह जानना चाहता था.

कप्तान बार्बियर वो समझाने के लिए संस्थान में आए. उन्होंने बताया कि उभरे हुए बिंदुओं को एक नुकीले सूजे से भारी कागज में छिद्रित किया जाता था. उस सूजे का नाम स्टाइलस था. संदेश को पढ़ने के लिए, पाठक को अपनी उंगलियों को डॉट्स के पैटर्न को छूना होता था.

फिर आया कठिन हिस्सा. बारबियर ने समझाया कि उन्होंने फ्रेंच भाषा में इस्तेमाल होने वाली छत्तीस बुनियादी ध्वनियों की प्रणाली का उपयोग किया था. उन्होंने ध्वनियों को एक वर्ग में व्यवस्थित किया, जिसे उन्होंने एक "ग्रिड" कहा, जिसमें छह पंक्तियाँ और छह स्तंभ ऊपर और नीचे थे. प्रत्येक ध्वनि को दो स्तंभों में बारह-बिंदु वाले सेल में दर्शाया गया था.

लुई ने महसूस किया कि पुस्तकालय की उभरी हुई किताबों में बड़े घुमावदार अक्षरों की तुलना में डॉट्स-डैश के इन सरल पैटर्न को महसूस करना बहुत आसान था. वो इस रीडिंग कोड को सीखने के लिए उत्सुक था.

बैठक में लड़के रात्रि-लेखन को लेकर उत्साहित हुए. उन्होंने ध्वनियों को छह पंक्तियों और छह स्तंभों में व्यवस्थित किया. लेकिन लड़के चिंतित नहीं थे. उन्हें याद करके सीखने की आदत जो थी. यदि वे ग्रिड को याद कर लेते तो उससे उन्हें अपनी कक्षाओं में नोट्स लेने और एक दूसरे को संदेश भेजने में मदद मिलती.

उभरे हुआ अक्षरों की तुलना में बार्बियर की रात "रात्रि-लेखन" तकनीक निश्चित रूप से एक बड़ा सुधार थी.



जब लुई ने अन्य छात्रों के साथ कोड का उपयोग किया तब उसने पाया कि उसमें कई अन्य चीज़ें काम नहीं करती थीं.

हो सकता है कि वो कप्तान बार्बियर मिलकर "रात्रि-लेखन" को ठीक कर सकें. लुई ने बार्बियर से मुलाकात की. हालांकि, चौवन वर्षीय सैन्य अधिकारी एक बारह वर्षीय लड़के से सलाह नहीं लेना चाहते थे.

फिर भी, "रात्रि-लेखन" की अपनी सीमाएँ थीं. उसमें कोई विराम चिह्न नहीं था, कोई वर्तनी नहीं थी, और कोई संख्या नहीं थी. छात्र छत्तीस ध्वनियों को जानने के बाद एक-दूसरे को लिख सकते थे. हालांकि, वे दृष्टिवान लोगों को नहीं लिख सकते थे जो पढ़ने-लिखने के लिए नियमित वर्णमाला का इस्तेमाल करते थे. एक बार नेत्रहीन छात्रों के स्कूल छोड़ने के बाद, बाहरी दुनिया में रात्रि-लेखन उनके लिए बहुत कम उपयोगी होगा.



अंधेरे में पढ़ना और लिखना

सेवानिवृत्त चार्ल्स बार्बियर ने फ्रांसीसी सेना में एक तोपखाने के अधिकारी के रूप में सेवा की थी. वो टॉर्च की रौशनी में सैनिकों द्वारा अंधेरे में आदेश पढ़ने के खतरों को समझते थे. ऐसे में सैनिकों को गोली मारी जा सकती थी. भाषा में उनकी रुचि और उनके युद्ध के अनुभवों ने उन्हें एक गुप्त कोड रचने का विचार दिया जिसे अंधेरे में पढ़ा जा सकता था. सेना के आदेश ज्यादातर बहुत छोटे होते थे, अक्सर एक शब्द जैसे "आगे बढ़ो" या "पीछे हटो".

बार्बियर ने ध्वनियों के आधार पर उभरे हुए बिंदुओं और डैश की एक प्रणाली बनाई. उन्होंने इसे "रात्रि-लेखन" कहा. जिन सैनिकों को रात में लिखित आदेश मिलते वे संदेश को छू सकते थे और उसका क्या मतलब यह जान सकते थे. उस आदेश को पढ़ने के लिए उन्हें किसी रोशनी की जरूरत नहीं थी.

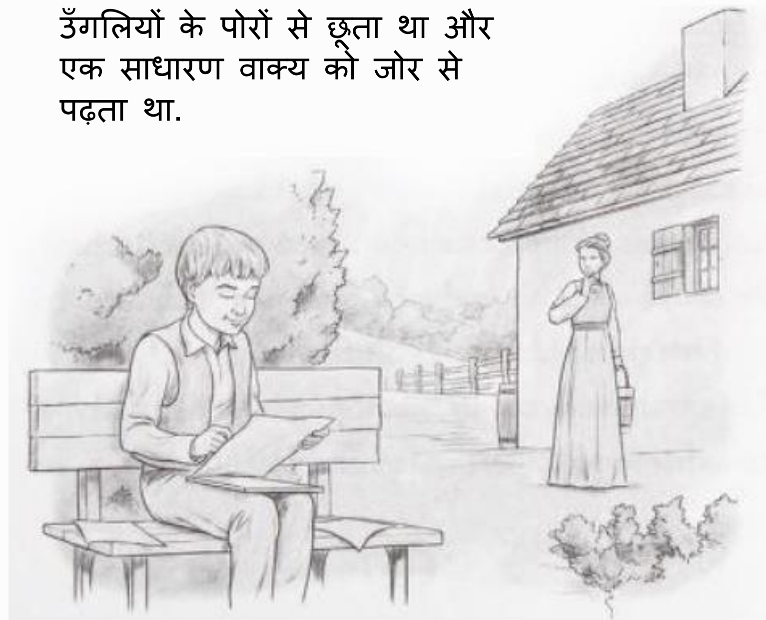
जब सेना ने "रात्रि-लेखन" में दिलचस्पी नहीं दिखाई तो बार्बियर ने सोचा कि वो प्रणाली अंधों के लिए उपयोगी साबित हो सकती थी. बाद में उन्होंने अपने सिस्टम का नाम बदलकर "सोनोग्राफी" कर दिया. लेकिन उसे व्यापक स्वीकृति कभी नहीं मिली.



लुई हार मानने वाला नहीं था. जब वो गर्मी की छुट्टियों के लिए घर गया, तो उसने ठान लिया कि वो अपने दम पर डॉट्स के साथ पढ़ने-लिखने का एक आसान तरीका खोज लेगा.

महत्वपूर्ण खोज

उन गर्मियों की छुट्टियों में कूपवरे में घर वापस आकर लुई ने, हमेशा की तरह खेत में मदद की. लेकिन जब भी उसे कुछ खाली समय मिलता तो वो अपने डॉट्स के साथ काम करता था. वो कागज के एक भारी टुकड़े के साथ अपना सूजा और स्लेट निकालता था. उसके माता-पिता देखते थे कि वो किस तरह कागज पर डॉट्स पंच करता था. फिर वो पंच किये कागज को अपनी उँगलियों के पोरों से छूता था और एक साधारण वाक्य को जोर से पढ़ता था.



लुई ने समझाया कि बिंदु उन ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करते थे जो शब्द बना सकते थे. वे शब्द, मिलकर, वाक्य बना सकते थे. वो अपनी उंगलियों से पढ़ रहा था. लेकिन ध्वनियों के उपयोग की इस प्रणाली को सीखना कठिन था, और वो उनसे उतना नहीं कर सकता था जितना वो करना चाहता था.

बाद में किसी ने लिखा कि "कूपवरे गांव के लोग यह देखकर मुस्कुराएंगे, शायद आश्चर्य करेंगे जब वे लुई को कागज पर चोंच मारते हुए देखेंगे." हालांकि, मोनिका और साइमन-रेने ने लुई के काम को बहुत गंभीरता से लिया. उन्होंने देखा कि उनका बेटा अपने इरादे का कितना पक्का था.

गर्मी की छुट्टियां खत्म होने के बाद लुई स्कूल लौट आया. तब तक उसे कोई सफलता नहीं मिली. लेकिन उसने हार नहीं मानी. वो अपनी स्लेट और सूजे को, जहाँ कहीं भी जाता अपने साथ लेकर जाता. यहाँ तक जब अन्य लड़के सो रहे होते तो भी वो बिस्तर पर काम करता होता.

एक बात लुई और उसके मित्र सहमत थे : बारह-बिंदु वाली ग्रिड का उपयोग करना बहुत कठिन था. बारह बिंदुओं को महसूस करने के लिए उन्हें कई अंगुलियों का उपयोग करना पड़ता था.



वो भ्रमित करने वाला था. यह बताने का कोई तरीका नहीं था कि एक वाक्य कहाँ समाप्त हुआ और दूसरा कहाँ शुरू हुआ.

लुई अपने दोस्तों के साथ चर्चा करता रहा. उसके "यूरेका" पल आने में तीन साल लगे. वो तब पंद्रह साल का था. उसने सोचा कि उसे केवल छह बिंदुओं वाली ग्रिड का उपयोग ही करना चाहिए. क्योंकि तब बिंदुओं को पढ़ने के लिए केवल एक उंगली की आवश्यकता होगी. और ध्वनियों की बजाए उसकी छह बिंदियों वाली ग्रिड वर्णमाला के अक्षरों के लिए खड़ी होगी.

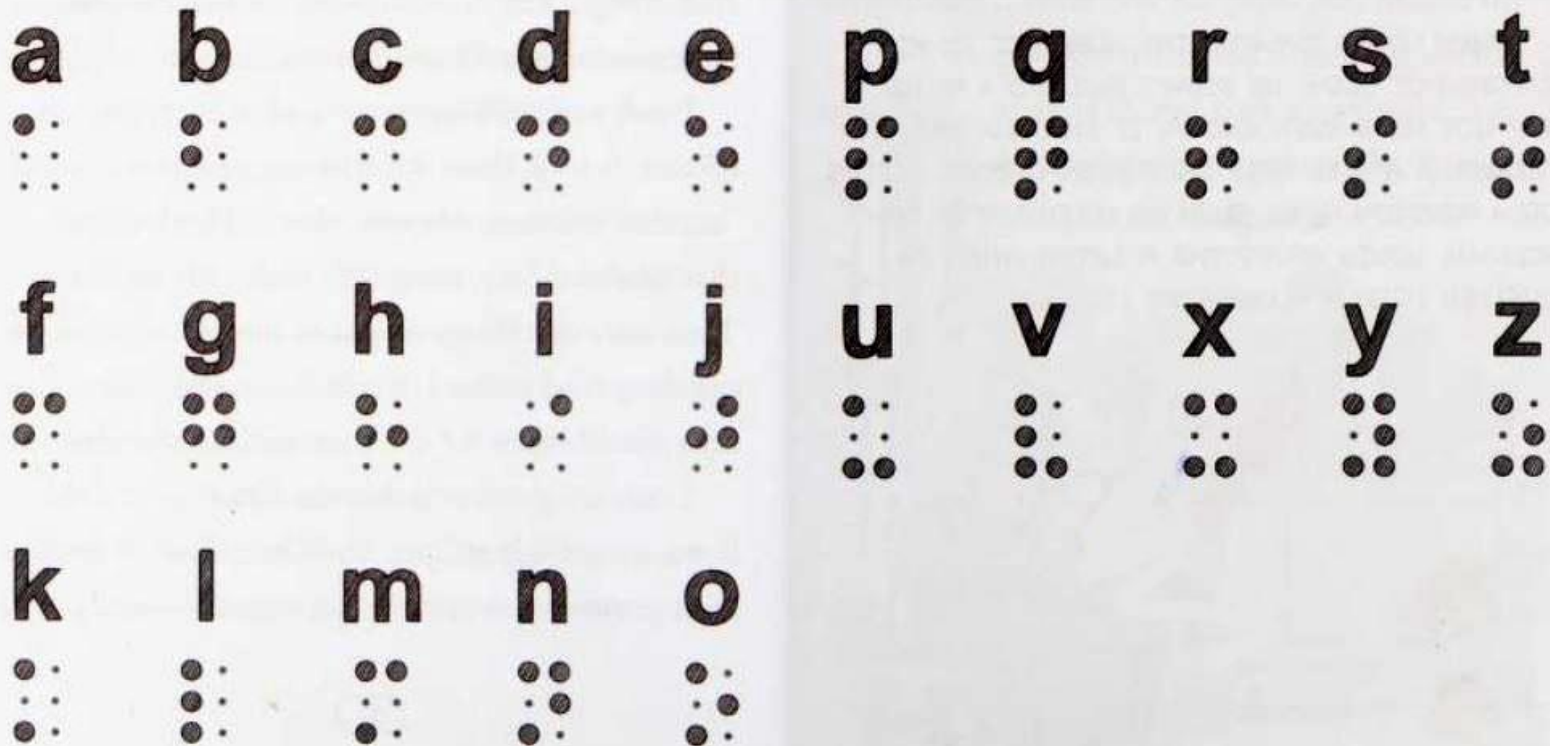
फिर लुई ने केवल बिंदियों से वर्णमाला बनाई. वो आश्चर्यजनक रूप से सरल थी. छह-बिंदियों वाली ग्रिड में प्रत्येक अक्षर की डॉट्स की अपनी व्यवस्था थी - तीन बिंदियों वाले स्थान के दो स्तंभों से बनता था एक सेल.

पहले दस अक्षर, A से J तक, प्रत्येक अक्षर में पहली और दूसरी पंक्ति पर बिंदुओं का एक ही पैटर्न था. पंक्ति तीन में कोई बिंदु नहीं थे.

दूसरे दस अक्षर, K से T तक, प्रत्येक में पहले दस अक्षरों के समान ही पैटर्न था पर पंक्ति तीन पर एक अतिरिक्त बिंदु था. जब पाठक तीसरी पंक्ति पर बिंदु महसूस करता तो वो यह समझ जाता था कि वो K से T तक के अक्षर पढ़ रहा था.

वर्णमाला के शेष अक्षर, U से Z पर पंक्ति एक और दो पर समान पैटर्न थे, लेकिन उनमें पंक्ति तीन पर दो बिंदु थे.

यह एक ऐसी वर्णमाला थी जो पढ़ने में सरल थी और जो केवल फ्रेंच ही नहीं, बल्कि अन्य भाषाओं के लिए भी काम करती थी. कोई भी व्यक्ति जर्मन, अंग्रेजी, इतालवी और अन्य भाषाओँ में भी जो चाहे लिख सकता था!

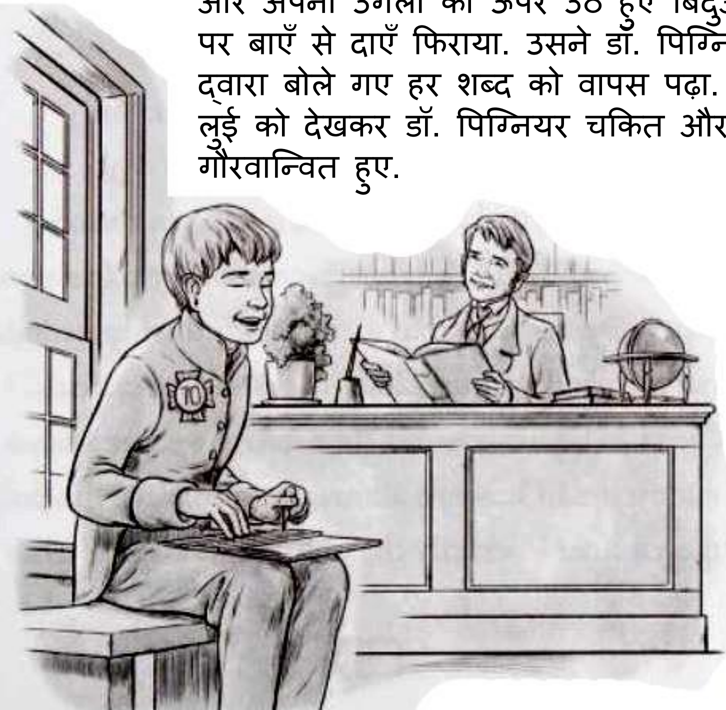


W कहां है?



जब लुई ने अपने उभरे हुए डॉट कोड में वर्णमाला बनाई, तो उसने उसमें W शामिल नहीं किया. हो सकता है कि उसे W के अस्तित्व का पता ही न हो. फ्रेंच में, W का उपयोग केवल विदेशी शहरों या विदेशी नाम जैसे वाशिंगटन या विलियम के लिए किया जाता था. लुई ने एक अंग्रेज मित्र के सुझाव के बाद W को जोड़ा.

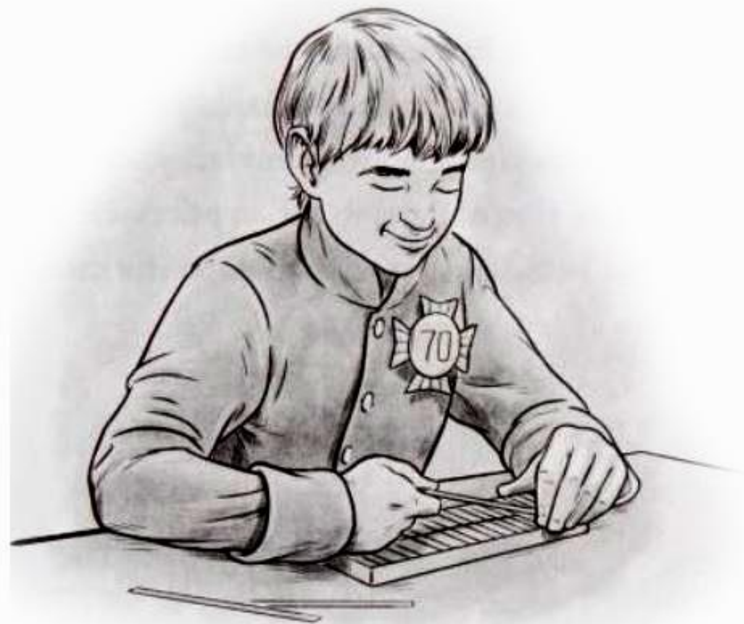
अब लुई काफी उत्साहित था. आखिर उसने नेत्रहीनों के लिए आसानी से पढ़ने-लिखने का एक तरीका खोज निकाला था. वो अपने सूजे, स्लेट और कागज़ के साथ डॉ. पिग्नियर के पास गया. उसने उनसे एक किताब निकालने और उसका एक हिस्सा ज़ोर से पढ़ने को कहा. जैसा कि डॉ. पिग्नियर ने पढ़ा, लुई ने अपने बिंदुओं को कागज में दाएं से बाएं अंकित किया. एक बिंदु पर लुई ने डॉ. पिग्नियर से तेजी से पढ़ने के लिए कहा. जब डॉ. पिग्नियर एक पैराग्राफ के अंत में पहुंचे, तो वे रुक गए. लुई ने तुरंत अपने कागज़ को पलट दिया और अपनी उंगली को ऊपर उठे हुए बिंदुओं पर बाएँ से दाएँ फिराया. उसने डॉ. पिग्नियर द्वारा बोले गए हर शब्द को वापस पढ़ा. लुई को देखकर डॉ. पिग्नियर चकित और गौरवान्वित हुए.



लुई की नई पद्धति का प्रयोग कक्षाओं में किया जाने लगा. अब विद्यार्थियों के लिए नोट्स लेना बहुत आसान हो गया था. अब उन्हें अपना पाठ सीखने के लिए स्मृति पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था. अब वे एक डायरी रख सकते थे और एक-दूसरे को नोट्स पढ़ सकते थे. अब किसी दृष्टिवान व्यक्ति को उनके लिए ऊँची आवाज़ में किताबें पढ़ने की ज़रुरत नहीं थी. और भविष्य में, किसी भी पुस्तक को, चाहे वो कितनी भी लंबी क्यों न हो, उभरे हुए बिंदुओं के कोड में परिवर्तित करना संभव था.

लुई ने पाया कि वो छह-बिंदु वाले सेल के साथ तिरेसठ पैटर्न बना सकत. इसलिए, वो वर्णमाला बनाने के बाद रुका नहीं. उसने कैपिटल अक्षरों, संख्याओं, विराम चिह्नों के लिए भी डॉट पैटर्न बनाए.

लुई ने उसी तरह के लेखन उपकरण तैयार किए जिनका बार्बियर ने इस्तेमाल किया था. वो भारी कागज का एक टुकड़ा एक स्लेट पर रखता था. इसके ऊपर वो छोटे छेदों वाली एक जाली रखता था जो उनके सिक्स-डॉट सिस्टम की तीन लाइनों से मेल खाता था. उभरे हुए बिंदुओं को एक कुंद सूजे से कागज में छिद्रित किया जाता था. जाली के कारण बिंदियां बिल्कुल सही जगह पर बनती थीं.



लुई ने अपने कोड में गणित और संगीत के प्रतीक जोड़े. उसका दोस्त गेब्रियल संगीत प्रतीकों के बारे में विशेष रूप से प्रसन्न होता. गेब्रियल अपना संगीत खुद कंपोज़ करता था. अब उसे अपने मूल संगीत को अपनी याददाश्त में नहीं रखना पड़ता था. अब वो अपने संगीत को लिख सकता था. अन्य अंधे लोग उस संगीत को अपनी उँगलियों से पढ़कर उसे बजा सकते थे.

लुई ने अपने कोड की खोज के लिए सालों समर्पित किए थे. फिर भी उसने अपनी पढ़ाई की कभी भी उपेक्षा नहीं की थी. ग्यारह और सोलह वर्ष की आयु के बीच, उसने इतिहास, भूगोल, व्याकरण, ज्यामिति और बीजगणित में पुरस्कार जीते थे. इनमें से पांच प्रथम पुरस्कार थे. वो एक प्रतिभाशाली संगीतकार भी था. उसने चेलो और पियानो के लिए भी पुरस्कार जीते थे.



एक बार एक पुरस्कार समारोह में एक आगंतुक ने लुई की बेंच के पीछे एक शेल्फ पर किताबों का ढेर देखा. वो यह जानकर चकित रह गया कि वो सभी पुस्तकें लुई को बतौर पुरस्कार मिली थीं. आगंतुक ने टिप्पणी की कि जब वो लुई के सामने बैठता तो किताबें लुई के सिर से बहुत ऊंची होती थीं.

छात्र से शिक्षक तक

1828 में लुई ने संस्थान से स्नातक की पढ़ाई ख़त्म की. वो दस साल की उम्र से उसी स्कूल में रहा था. डॉ. पिग्नियर ने उससे एक छात्र-शिक्षक के रूप में स्कूल में ही बने रहने के लिए कहा. लुई का सबसे अच्छा दोस्त, गेब्रियल, और एक अन्य दोस्त और पूर्व छात्र, हिप्पोलीटे कोल्टैट, पहले से ही एक वर्ष के लिए छात्र-शिक्षक थे.

डॉ. पिग्नियर के प्रस्ताव से लुई रोमांचित हुआ. अब, उन्नीस वर्ष के एक युवा के रूप में, वो उसी स्थान पर रहकर अन्य अंधे लड़कों को पढ़ा सकता था. उसने अपने शेष जीवन का अधिकांश समय उसी संस्थान में बिताया.

अब पहली बार लुई को रहने को अलग कमरा मिला था. अब उसे छात्रावास का शोरगुल और मस्ती याद आती थी. लेकिन उसे अपनी निजी जगह पसंद थी जहाँ वो विचारों पर चिंतन-मनन कर सकता था.

उसकी उभरी हुई डॉट प्रणाली कैसे काम करती है? उसने उस बारे में लिखने की सोची.



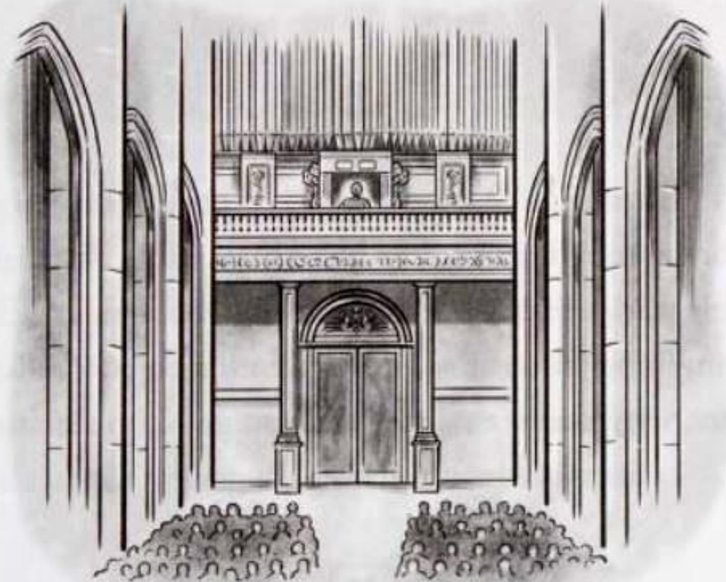
लुई को अल्प वेतन ही मिलता था. उससे जितना बन पाया उसने पैसे बचाए. उन पैसों से उसने अपने लिए एक पियानो खरीदा.

एक पसंदीदा शौक

लुई में ऑर्गन बजाने की एक उल्लेखनीय प्रतिभा थी. उसके दोस्त हिप्पोलाइट के अनुसार लुई का ऑर्गन बजाना "सटीक, शानदार और आकस्मिक था."

लुई को पास के चर्च में ऑर्गन बजाने के लिए आमंत्रित किया गया था. पेरिस के चर्चों में काम करने वाले अन्य लड़कों की तरह ही उसे भी एक छोटा वेतन मिलता था.

जब जर्मन संगीतकार, पियानोवादक, और ऑर्गेनिस्ट फेलिक्स मेंडेलसोहन ने लुई को बजाते हुए सुना, तो उन्होंने प्रतिभाशाली युवक की बहुत प्रशंसा की.





लुई अपनी कक्षाओं में दृष्टिवान और नेत्रहीन दोनों ही लड़कों के बीच एक बहुत प्रिय शिक्षक बन गया. वह उदार और दयालु था. अगर किसी लड़के को किसी चीज की जरूरत होती तो वो लुई के पास जाता. अगर किसी लड़के को पैसे की जरूरत होती तो भी लुई उसे कर्ज देने को हमेशा तैयार रहता था.

लुई ने भूगोल और व्याकरण पढ़ाना शुरू किया. उसने दृष्टिवान और दृष्टिहीन दोनों छात्रों को पढ़ाया. वे सभी लुई की कक्षाओं की प्रतीक्षा करते थे. लुई अपने विषयों को जीवंत बना देता था. वो पढ़ाते समय हंसी-मज़ाक भी करता था लेकिन यह भी सुनिश्चित करता था कि छात्र अपना पूरा ध्यान दें.

हिप्पोलीटे ने बाद में लिखा कि लुई के छात्रों ने "अपने शिक्षक को खुश करने के लिए निरंतर प्रयास किए, जिन्हें वे एक सम्मानित सीनियर और एक बुद्धिमान और प्रबुद्ध मित्र के रूप में प्यार करते थे. लुई छात्रों को हमेशा अच्छी सलाह देता था."

पांच वर्षों के भीतर, लुई, गेब्रियल और हिप्पोलीटे को पदोन्नत कर दिया गया. उसके बाद प्रत्येक युवक ने गर्व से एक पूर्ण शिक्षक की वर्दी पहनी, जिस पर ताड़ के पत्तों के आकार का एक सोने का मैडल उनकी वर्दी पर पिन किया गया था.

लुई ने कई विषयों को पढ़ाया - भूगोल, इतिहास, व्याकरण और वर्तनी, अंकगणित और बीजगणित. अब उसकी कक्षाओं में केवल नेत्रहीन लड़के थे.



शाम के समय वो अपने उभरे हुए बिंदुओं की पठन प्रणाली को लिखनें का काम करता था. उसका नाम "मेथड ऑफ राइटिंग वर्ड्स, म्यूजिक और प्लेन्सॉन्ग बाइ मीन्स ऑफ डॉट्स फॉर द यूज फॉर द ब्लाइंड एंड अरेंज्ड बाय द देम" था. उसे संस्थान द्वारा 1829 में प्रकाशित किया गया. लुई ने कैप्टन बार्बियर को रेज़्ड-डॉट कोड के आविष्कारक के रूप में श्रेय दिया. अपने शुरुआती पन्नों में, लुई ने लिखा: "अगर मैंने आविष्कारक की तुलना में अपनी प्रणाली के फायदे दिखाए हैं, तो हमें आविष्कारक के सम्मान में कहना चाहिए कि वो उनकी ही प्रणाली थी जिसने हमें सबसे पहले उभरी बिंदियों का विचार दिया था."

डॉ. पिग्नियर ने शिक्षकों और छात्रों को कक्षाओं में, लुई के कोड का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया. वो इतना सफल रहा कि डॉ. पिग्नियर ने फ्रांसीसी सरकार से उस प्रणाली को नेत्रहीनों को पढ़ना-लिखना सिखाने का आधिकारिक तरीका बनाने के लिए कहा.

पर सरकार का जवाब "न" में था.

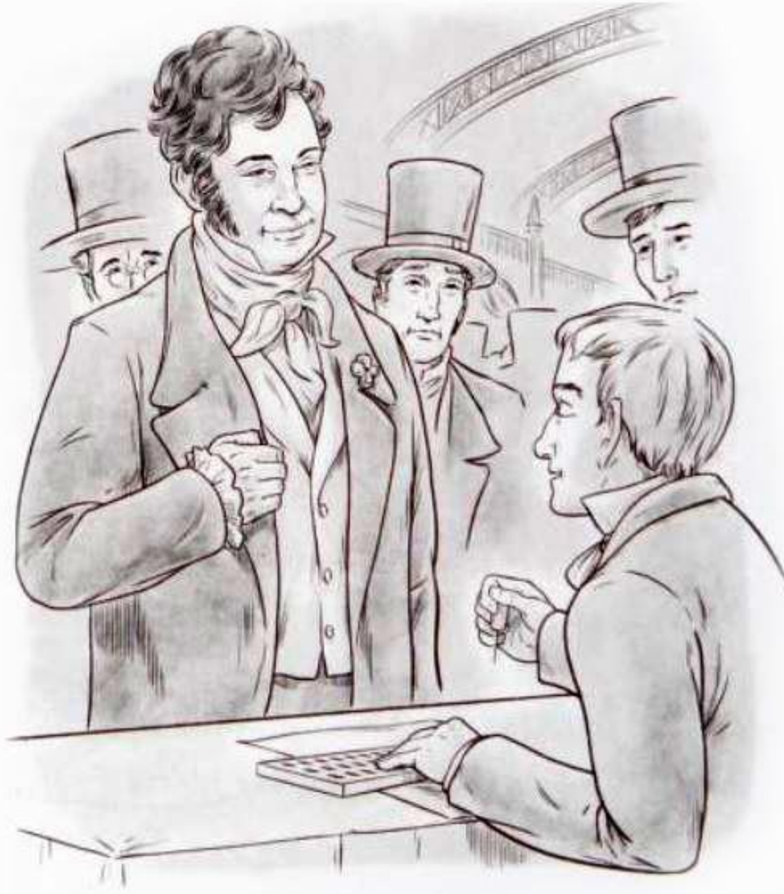
सरकार ने उसके इस्तेमाल पर रोक नहीं लगाई, बल्कि पुरानी एम्बॉस्ड प्रणाली को यथावत रखने पर जोर दिया. लुई को लगता था कि किसी ने भी उसके सिस्टम को अच्छी तरह देखा तक नहीं था. उसने सरकार को खुद एक पत्र भी लिखा, लेकिन किसी ने उसका जवाब तक नहीं दिया.

1834 में पेरिस शहर में एक बड़ा मेला लगा था. उसे उद्योग की पेरिस प्रदर्शनी कहा जाता था. डॉ. पिग्नियर ने लुई को वहां अपना कोड प्रदर्शित करने के लिए कहा. प्रदर्शनी और नए आविष्कारों को देखने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आए थे. नवीनतम भाप इंजन विशेष रूप से लोकप्रिय था. कई फ्रांसीसी सरकारी अधिकारी उसमें भाग ले रहे थे. तब हो सकता है कि कोई लुई को अपने कोड का उपयोग करते हुए देखे, और उसमें दिलचस्पी दिखाए.

लुई एक मेज पर बैठ गया और जब लोग उसके पास रुके, तो उसने उनसे कुछ कहने को कहा और फिर तुरंत लुई ने उसे अपने कोड में लिखा. जब लोग बोलते थे तो वे लुई को कागज पर बिंदियां पंच करते हुए देखते थे. वो क्या कर रहा था? उन्हें तब बहुत आश्चर्य हुआ जब लुई ने उन्होंने जो कुछ भी कहा था, वो हरेक शब्द उभरी हुए बिंदुओं को महसूस करके वापस पढ़ता था.



फ्रांस के राजा लुई-फिलिप भी मेले में आए. उन्होंने भी पूछा कि लुई क्या कर रहा था. राजा ने सब्र से सबकुछ देखा और सुना, लेकिन बाद में लुई ने राजा से कभी नहीं सुना. और न ही किसी और से.



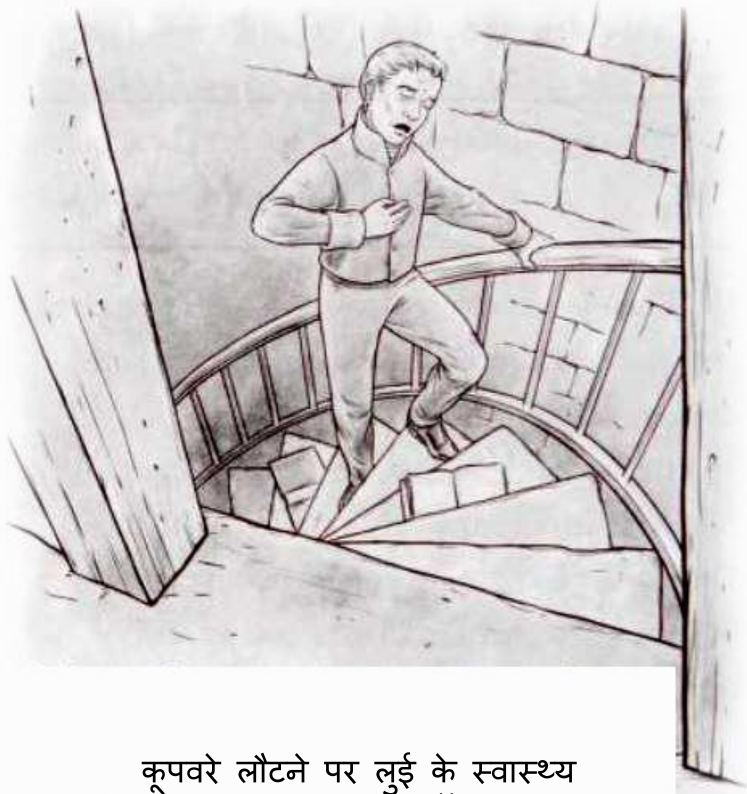
एक संघर्ष

जब लुई केवल बाईस वर्ष का था, तब उसे अपने भाई से एक बहुत दुखद समाचार मिला. लुई के पिता गंभीर रूप से बीमार थे.

उसके भाई ने डॉ. पिग्नियर को पत्र लिखकर लुई की देखभाल करने को कहा. लुई के पिता और डॉ. पिग्नियर के सम्बन्ध हमेशा से दोस्ताना थे, और लुई के भाई को पता था कि डॉ. पिग्नियर पहले ही लुई के दूसरे पिता की तरह थे.

31 मई, 1831 को लुई के पिता की मृत्यु हो गई.

उसी वर्ष, लुई की खुद की सेहत खराब हो गई. उसे यह नहीं पता था कि उसे क्या बीमारी थी. लेकिन उसे शायद तपेदिक की शुरुआत थी. अपने कई छात्रों की तरह, लुई वर्षों से खांसी से पीड़ित था. कभी-कभी संस्थान की घुमावदार, ऊंची सीढ़ियों पर चढ़ने से वो, पीला और बेदम हो जाता था.



कूपवरे लौटने पर लुई के स्वास्थ्य में हमेशा सुधार हुआ था. डॉ. पिग्नियर उसे अक्सर कूपवरे जाने के लिए प्रोत्साहित करते थे. एक यात्रा के दौरान लुई ने डॉ. पिग्नियर को अपनी छुट्टी के बारे में एक पत्र भेजा.

"मैंने कुछ पियानो को ट्यून किया है और अगर मैं अधिक उद्यमी होता तो मेरे पास एक आकर्षक छुट्टी होती, लेकिन मुझे ग्रामीण इलाकों के सुख पसंद है ..."

घर पर गर्मियों की छुट्टियां हमेशा लुई की आत्मा को खुश करती थीं. वो गांव में अपने पुराने दोस्तों से मिलता था. वो धूप का आनंद लेता और वहां उसे गंभीर सोच का वक़्त मिलता था. उससे जितना बनता वो पहाड़ियों पर भी चढ़ता और सैर करता था.

कितना अच्छा होता अगर वो पेरिस से घर लिख सके और फिर उसका परिवार उसे उत्तर वापस लिख सके. लेकिन अंधे और दृष्टिवान लोग भला एक-दूसरे को पत्र कैसे लिख सकते थे?

किसी पत्र को भेजने के लिए, लुई जैसे अंधे व्यक्ति को अपनी बात एक मुंशी से कहनी पड़ती थी - किसी ऐसे व्यक्ति से जो उनका संदेश लिख सकता था.

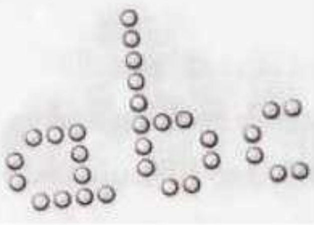


कभी-कभी इससे ठीक-ठीक काम हो जाता था. पर अक्सर मुंशी की वर्तनी और लिखावट दोनों खराब होती थीं, जिससे पत्र पढ़ना मुश्किल हो जाता था. और जब घर से कोई पत्र आता तो किसी को लुई को जोर से पढ़कर सुनाना पड़ता था. कितना अच्छा होता अगर अंधे अपने पत्र खुद पढ़ पाते.

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि 1839 में लुई को एक सुन्दर विचार आया. वो उभरे हुए बिंदुओं का उपयोग वर्णमाला के अक्षरों के आकार बनाने के लिए करेगा. शब्दों को अंधों की उंगलियां और दृष्टि वालों की आँखें पढ़ सकती थीं. लुई ने छह के बजाय दस बिंदु इस्तेमाल करना तय किया. इसमें सबसे ऊंचे और नीचे वाले अक्षरों के लिए जगह होनी चाहिए थी - जैसे h या y के लिए.

एक बार फिर, उन्होंने एक बोर्ड पर टिके हुए कागज़ का इस्तेमाल किया, जो छोटे-छोटे छेदों की जाली से ढका हुआ था. उसने अक्षरों को एक कुंद सूजे की मदद से कागज पर दबाया. अक्षरों को पीछे की ओर बनाया गया था ताकि उन्हें कागज के दूसरी तरफ पढ़ा जा सके.

लुई ने लिखने के इस तरीके को "डेका-पॉइंट" या दस-बिंदु लेखन कहा.



इस प्रणाली ने अच्छा काम किया, लेकिन हाथ से पत्र लिखने में उसमें काफी समय लगा. लुई ने एक पूर्व नेत्रहीन छात्र पियरे फौकॉल्ट के साथ काम करना शुरू किया. उनका विचार एक ऐसी मशीन बनाने का था जो लिखाई का काम कर सके. पियरे एक प्रतिभाशाली संगीतकार था और यांत्रिक चीजों में बहुत कुशल था. उसकी और लुई की एक अच्छी जोड़ी थी.

1842 तक उन्होंने नेत्रहीनों के लिए पहली लेखन मशीन बना ली. उसका नाम रैफिग्राफ था. अब अंधे बहुत तेजी से लिख सकते थे, और उसका उपयोग करना भी काफी आसान था. हालांकि फौकॉल्ट ने ही उस मशीन को डिजाइन किया था, लेकिन उसने इस विचार के लिए लुई को श्रेय दिया.

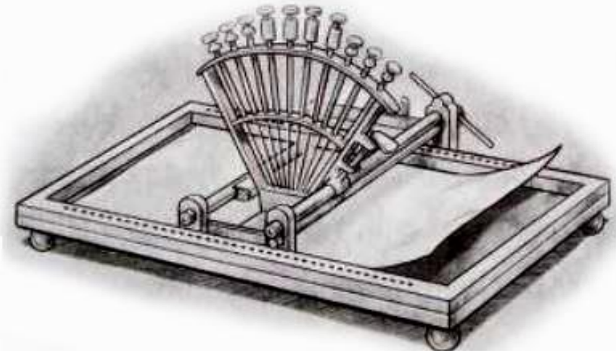


पियरे फौकॉल्ट



"मेरी नई मशीन लुई की खोज की निरंतरता के अलावा और कुछ नहीं है."

लुई और पियरे अपने समय से काफी आगे थे. फिर 1867 में ही पहले काम करने योग्य टाइपराइटर का उत्पादन किया गया.



एक काला बादल

डॉ. पिग्नियर, लुई के स्वास्थ्य को लेकर बहुत चिंतित थे. लुई को खून की खांसी हो रही थी. एक डॉक्टर को बुलाया गया. उसने कहा कि, लुई तपेदिक से पीड़ित था. उस बीमारी का कोई इलाज नहीं था. लेकिन भरपूर आराम तपेदिक के रोगियों की मदद कर सकता था.

डॉ. पिग्नियर ने लुई से अपने शिक्षण में कटौती करने का आग्रह किया. उन्होंने जोर देकर कहा कि लुई अपनी ताकत हासिल करने के लिए कूपवरे लौट जाए. लुई अनिच्छा से गया, लेकिन लुई, पत्रों द्वारा डॉ. पिग्नियर के संपर्क में रहा.

दुर्भाग्य से, 1840 में, लुई की एक लंबी घर यात्रा के दौरान, डॉ. पिग्नियर को सेवानिवृत्त होने के लिए मजबूर होना पड़ा. उनके उप-निदेशक, पियरे-आर्मंड डुफौ ने सरकार को डॉ. पिग्नियर को हटाने और उसे खुद संस्थान का भार संभालने के लिए राजी किया.



पियरे आर्मंड डूफौ

डॉ. पिग्नियर के जाने की खबर से लुई तबाह हो गया होगा. डूफौ को लोग पसंद नहीं करते थे. कैसे और क्या पढ़ाया जाना चाहिए, इस बारे में भी डूफौ के विचार डॉ. पिग्नियर के विचारों से बहुत भिन्न थे. इसका मतलब था बदलाव - बड़े बदलाव.

पेरिस लौटने पर, लुई ने पाया कि लैटिन, इतिहास या ज्यामिति में और कक्षाएं बंद कर दी गई थीं. एक शिक्षक के रूप में वो काफी भयभीत था. लेकिन उसने बहस करने की हिम्मत नहीं की. डूफौ, लुई को नौकरी से हटा सकता था. पर लुई वहां रहना चाहता था और अपने छात्रों की मदद करना चाहता था.

डुफौ ने छप्पन साल पहले हौयू द्वारा डिजाइन किए गए उभरे हुआ टाइप नापसंद किया था. उसने आदेश दिया कि पुस्तकालय में सभी उभरी हुई पुस्तकों को निकालकर जला दिया जाए.

वो उन्हें स्कॉटलैंड और अमेरिका की प्रणालियों वाली पुस्तकों से बदलना चाहता था. सच्चाई में उन्हें हौयू की पुस्तकों की तुलना में उन्हें पढ़ना थोड़ा आसान था, लेकिन बहुत ज़्यादा नहीं.



एक बात निश्चित थी: डुफौ का लुई के कोड में कोई विश्वास नहीं था. उसने बिंदियों के कॉलम के विचार का मज़ाक उड़ाया जो वर्णमाला के वास्तविक अक्षरों जैसे बिल्कुल भी नहीं दिखते थे. उसके लिए यह कोई मायने नहीं रखता था कि लुई के उभरी हुई बिंदुओं ने पढ़ना तेज़ और आसान बनाया था.

लुई के कोड की हर सामग्री या किताब नष्ट कर दी गई या बंद कर दी गई.

नए स्कूल निदेशक ने कक्षा में भी लुई के कोड के प्रयोग को वर्जित कर दिया. लेकिन छात्र उसे छोड़ना नहीं चाहते थे. उन्होंने इतने लंबे समय तक उसका इस्तेमाल किया था कि अब वो उसे छोड़ नहीं सकते थे.

फिर डूफौ ने, कोड लिखने के वाले छात्रों के उपकरण छीन लिए. पर वो फिर भी छात्रों को नहीं रोक सका. छात्रों ने बिना स्लेट के कागज को पंच करने के तरीके खोजे. अब उन्हें स्टाइलस (सूजे) की जरूरत ही नहीं थी. उन्होंने वर्कशॉप की सुइयों, कीलों, बुनाई की सिलाइयों और भोजन कक्ष के कांटे का इस्तेमाल करके कागज़ पर बिंदियां बनाईं.



बड़े छात्रों ने यह सुनिश्चित किया कि छोटे लड़के लुई का कोड सीखें. एक लड़के ने लिखा: "हम गुप्त रूप से वर्णमाला सीखते थे, और जब हम उसका इस्तेमाल करते हुए पकड़े जाते थे, तो हमें दंडित किया जाता था."



सौभाग्य से, डूफौ ने अपने सहायक के रूप में एक खुले दिमाग वाले व्यक्ति को काम पर रखा. उसका नाम जोसेफ गुआडेट था. गुआडेट ने उससे पहले कभी नेत्रहीनों के साथ काम नहीं किया था

गुआडेट को लुई के कोड का मूल्य समझने में बहुत समय नहीं लगा. उसने उनका उपयोग करते रहने के लिए छात्रों का दृढ़ संकल्प भी देखा. गुआडेट को यकीन था कि वो कोड बाहरी दुनिया में नेत्रहीनों के लिए सबसे अच्छी प्रणाली के रूप में अपना रास्ता खोज लेगा.



जोसेफ गुआडेट

अब गुआडेट को लुई के कोड को वापस लाने के लिए डुफौ को मनाने का एक तरीका खोजना था.

डुफौ एक गर्वित व्यक्ति था. वो संस्थान में किसी भी सफलता के लिए सारा श्रेय खुद लेना चाहता था. गुआडेट ने सुझाव दिया कि लुई का उठी हुई बिंदियों का डॉट कोड शायद नेत्रहीनों के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला सिस्टम बन जाएगा. निश्चित रूप से डुफौ को उसका कोई क्रेडिट नहीं मिलेगा यदि वो उसे उस स्कूल में उपयोग की अनुमति नहीं देगा जहां कोड का आविष्कारक अभी भी रहता और पढ़ाता था.

डुफौ को बस इतना ही सुनने की ज़रुरत थी. फिर उसने लुई के बिंदु कोड पर से प्रतिबंध हटा दिया.

एक नया घर



अल्फोंस डी. लैमार्टाइन

जब तक डॉ. पिग्नियर संस्थान में थे, वो हमेशा संस्थान के लिए एक नए भवन के लिए सरकार से मांग करते रहते थे. 1838 में, एक लेखक, कवि और राजनीतिज्ञ, अल्फोंस डी. लैमार्टाइन ने संस्थान का दौरा किया और वो इमारत की सड़ती हुई स्थिति से भयभीत हुए. "कोई भी विवरण आपको उस इमारत की सच्ची तस्वीर नहीं दे सकता है, जो बहुत छोटी, गंदी और उदास है ..." उन्होंने सरकार को बताया.



उन्होंने संस्थान को फंड देने का आग्रह किया. उन्हें मंज़ूरी भी मिल गई और फिर अगले वर्ष नए भवन का निर्माण शुरू हुआ.

पांच साल बाद, लुई अपनी मां और अपने भाई के साथ उद्घाटन समारोह में आया. उसे कितना गर्व हुआ होगा! दुख की बात यह थी कि उसके मित्र और गुरु डॉ. पिग्नियर वहां पर उपस्थित नहीं थे.

गुआडेट ने दर्शकों को दिखाया कि लुई का कोड नेत्रहीनों के लिए कितना मूल्यवान था.

सबसे पहले उसने एक अंधी लड़की को कमरे से बाहर भेजा. फिर उसने दर्शकों में से किसी एक को कविताओं की एक किताब सौंपी.

जब उस व्यक्ति ने जोर से कविता पढ़ी, तो स्कूल के एक अन्य नेत्रहीन छात्र ने लेखनी के साथ उसे बिंदुओं के कोड में लिखा.

फिर बाहर गई लड़की को वापस अंदर बुलाया गया. दूसरे नेत्रहीन छात्र ने जो डॉट्स में लिखा था उसने उस पन्ने को उठाया. फिर उसने बिना किसी हिचकिचाहट के पूरी कविता को जोर से पढ़ डाला.

उसके बाद, एक शिक्षक ने एक संगीतमय वाक्यांश लिखा. एक अन्य छात्र कमरे में लौट आया और उसने लिखित संगीत को सही ढंग से सुनाया.

किंवदंती के अनुसार दर्शकों में से एक आदमी कूदा और उसने वो सबकुछ मानने से इनकार किया. उसे उसमें कोई चाल लगी! इसलिए, उससे उसकी पसंद की कोई चीज़ पढ़ने के लिए कहा गया. उस आदमी को अपनी जेब में थिएटर का टिकट मिला.

दुबारा फिर से, एक लड़की कमरे से बाहर निकल गई और उस आदमी ने अपने टिकट पर लिखी जानकारी को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ा.



वापस लौटने पर, लड़की ने दूसरे नेत्रहीन छात्र से उभरे हुए बिंदुओं का पेपर लिया. उसने उसे पलट दिया और बिंदुओं पर हाथ फेरते हुए उसने जल्दी और बिना किसी गलती के थिएटर टिकट की जानकारी पढ़ी. उसके बाद दर्शकों ने तालियां बजाईं!



गुआडेट उससे प्रसन्न हुआ. वो लुई का बहुत सम्मान करता था. उभरी बिंदियों वाले कोड के लुई के आविष्कार ने संस्थान के युवा छात्रों को बहुत मदद की थी. कोड के बारे में एक पैम्फलेट में, गुआडेट ने लिखा, "ब्रेल विनम्र, बहुत विनम्र था. उसके आस-पास के लोग उसकी सराहना नहीं करते थे. .. हम लोगों ने पहली बार जनता को लुई के आविष्कार के महान महत्व से अवगत कराया."

लुई संसथान में पढ़ाता रहा, लेकिन अब वो उतनी कक्षाएं नहीं लेता था. उसे अभी भी स्कूल से दूर आराम के लिए समय बिताने की जरूरत थी.

फिर 1847 में लुई को अपनी तबियत अच्छी होती लगी. उसने और कक्षाएं पढ़ाने की सोची. उसने अपने उभरे हुए बिंदु कोड में पुस्तकों का अनुवाद करना जारी रखा. और उसने अपने दोस्तों के साथ संगीत महफिलों का आनंद भी लिया.

लेकिन धीरे-धीरे उसकी तबीयत फिर से खराब हो गई. तीन साल बाद, लुई को समझ में आया कि अब वो पढ़ाना जारी नहीं रख सकता था. वो बीस साल से अधिक समय से तपेदिक से जूझ रहा था. फिर उसने डायरेक्टर से उसे रिटायर करने के लिए कहा.

निर्देशक ने लुई की बात समझी, लेकिन लुई को संस्थान में ही रहने को कहा. अपनी माँ को लिखे एक पत्र में, लुई ने लिखा: "अगर गर्म मौसम वापस आएगा, और अंगूर की फसल बेहतर होगी तो मेरी भी तबियत सुधरेगी."

हालाँकि, दिसंबर 1851 में, लुई पर एक भयंकर खांसी का हमला हुआ, जिसमें खून की खांसी हुई. क्रिसमस का पर्व निकल गया, लेकिन फिर उसकी तबियत ने एक खराब मोड़ लिया. फिर 6 जनवरी, 1852 को, अपने परिवार और अपने आसपास के दोस्तों के साथ, लुई ब्रेल की मृत्यु उनके तैंतालीसवें जन्मदिन के ठीक दो दिन बाद हुई.

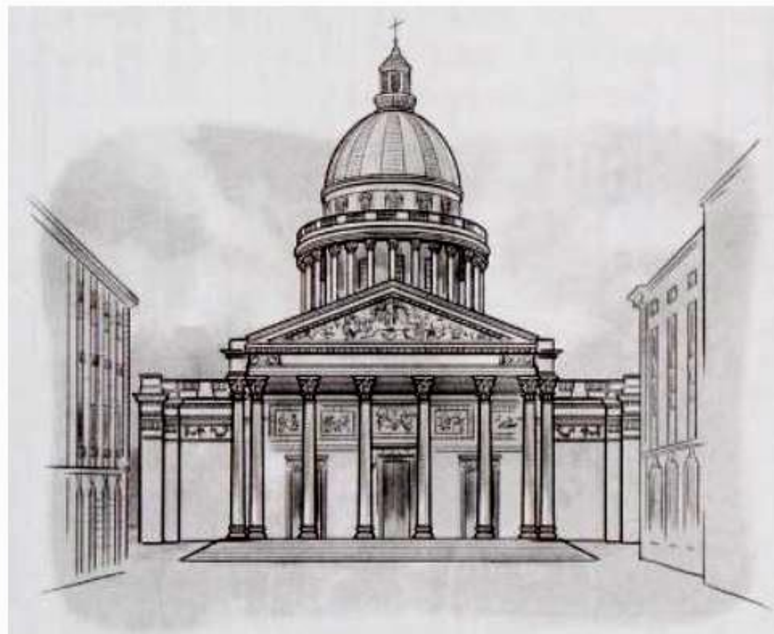


लुई को अपने पिता साइमन-रेने और उनकी एक बहन के साथ कूपवरे कब्रिस्तान में दफनाया गया.

उसने साफ़ निर्देश छोड़े कि उसके सारे सामान और संपत्ति के साथ क्या किया जाए. उसके कमरे में लकड़ी का एक डिब्बा मिला जिस पर लिखा था, "इसे बिना खोले जला दिया जाए." डिब्बे के अंदर कागज की रसीदे उन लोगों की थीं, जिन्होंने कभी लुई से पैसे उधार लिए थे. लुई हमेशा से ही उदार था. वो नहीं चाहता था कि उधार लेने वाले अब उन पैसों की चिंता करें. रसीदों को जलाने के पीछे उसका सन्देश था, "अब उनके बारे में भूल जाओ."

यकीन करना मुश्किल है, लेकिन पेरिस के अखबारों ने लुई की मौत का कोई जिक्र नहीं किया. फ्रांसीसी सरकार अभी भी नेत्रहीनों के लिए मान्यता प्राप्त पढ़ने और लिखने की प्रणाली के रूप में उभरे हुए अक्षरों से चिपकी हुई थी. हालाँकि, 1854 में, लुई की मृत्यु के दो साल बाद, फ्रांस की सरकार ने अंततः लुई के कोड को फ्रांस में नेत्रहीनों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए आधिकारिक प्रणाली घोषित किया.

लगभग पच्चीस साल बाद, लुई के कोड को "ब्रेल" के रूप में जाना जाने लगा और वो दुनिया भर में फैल गया.



1952 में, लुई की मृत्यु के शताब्दी वर्ष पर, उन्हें अंततः उनके देश द्वारा सम्मानित किया गया. उनके अवशेषों को कूपवरे के कब्रिस्तान से पेरिस के पेंथियन ले जाया गया. उसके अवशेषों को एक विशाल गुंबद वाली इमारत में रखा गया जो फ्रांस के सम्मानित हीरो का विश्राम स्थल था.



जैसे ही उनका ताबूत शहर की सड़कों से गुजरा, कृतज्ञ प्रशंसकों की एक परेड उनके सफेद बेंत को थपथपाते हुए पीछे-पीछे चली.

लुई ब्रेल के जीवन की समय-रेखा

1809 का जन्म 4 जनवरी को फ्रांस के कूपवरे में हुआ

1812 अपने पिता की कार्यशाला में दुर्घटना में एक आंख में अंधापन, जिससे संक्रमण दूसरी आंख में भी फैल गया

1816 सात साल की उम्र में गांव के स्कूल में प्रवेश किया

1819 15 फरवरी को पेरिस में रॉयल इंस्टिट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ में दाखिला लिया

1821 रात्रि-लेखन प्रणाली देखी, उभरे हुए बिंदुओं का उपयोग करने वाली एक विधि

1824 उभरे हुए डॉट कोड का इज़ाद किया, जिसे अंततः "ब्रेल" कहा गया

1829 अपने कोड की व्याख्या करते हुए एक पुस्तक लिखी जिसे संस्थान ने प्रकाशित किया

1833 संस्थान में पूर्ण शिक्षक के रूप में पदोन्नत

सेंट-निकोलस-डेस-चैंप्सो में वाद्ययंत्र ऑर्गन बजाने के लिए काम पर रखा गया

1834 उद्योग के पेरिस प्रदर्शनी में अपने उठाए गए-डॉट कोड को प्रदर्शित किया

1835 तपेदिक की बीमारी

1839 ने डेका-पॉइंट डिजाइन किया, जो अंधे और दृष्टिवान लोगों के बीच एक-दूसरे के साथ संवाद करने का तरीका था

1841 एक अंधे संगीतकार और मैकेनिक फौकॉल्ट के साथ एक मशीन "रैफिग्राफ" बनाई जिसने डेका-पॉइंट की गति बढ़ाई

1844 संस्थान को नए भवन में ले जाया गया

22 फरवरी को उद्घाटन समारोह में सम्मानित

1852 6 जनवरी को तैंतालीस वर्ष की आयु में तपेदिक से मृत्यु

1854 ब्रेल को अंततः फ्रांस में नेत्रहीनों के लिए आधिकारिक प्रणाली नामित किया गया

विश्व की समय-रेखा

1809 अब्राहम लिंकन और चार्ल्स डार्विन का जन्म 12 फरवरी को हुआ

1814 वाशिंगटन. डीसी, 1812 के युद्ध के दौरान अंग्रेजों द्वारा कब्जा कर लिया गया और जला दिया गया

1815 18 जून को वाटरलू की लड़ाई में नेपोलियन बोनापार्ट को अंग्रेजों ने हराया

1820 12 मई को, इटली के फ्लोरेंस में फ्लोरेंस नाइटिंगेल का जन्म हुआ

1823 राष्ट्रपति जेम्स मोनरो ने, मोनरो सिद्धांत की घोषणा की

1825 इंग्लैंड में पहले यात्री ढोने वाले रेलमार्ग की शुरुआत

1833 ब्रिटिश साम्राज्य में दासता उन्मूलन अधिनियम पारित किया गया

1834 20 मई को पेरिस में अमेरिकी क्रांतिकारी युद्ध के नायक गिल्बर्ट डू मोटियर - मार्क्विस डीसी लाफायेट की मृत्यु

1836 मेक्सिको ने अलामो की लड़ाई जीती

1837 20 जून को विक्टोरिया को इंग्लैंड की रानी का ताज पहनाया गया

1841 ब्रिटिश वैज्ञानिक रिचर्ड ओवेन ने "डायनासोर" शब्द का आविष्कार किया

1844 सैमुअल मोर्स ने वाशिंगटन और बाल्टीमोर के बीच पहला "आधिकारिक" लंबी दूरी का टेलीग्राम भेजा

1849 कैलिफोर्निया में सोने की खोज की गई और फिर कैलिफोर्निया में सोने खोजने वालों की भीड़ शुरू हुई

1852 हैरियट बीचर स्टोव द्वारा "अंकल टॉम का केबिन" प्रकाशित हुई - लुई नेपोलियन ने खुद को नेपोलियन ॥। घोषित किया